



संदेश

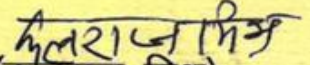
मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि 'बोर्ड ऑफ स्कूलिंग एण्ड स्किल एजुकेशन', सिविकम द्वारा अपने प्रथम स्थापना दिवस पर 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 : समग्र समावेशी गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी शिक्षा की ओर भारत' विषयक कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया है और इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

देश की नई शिक्षा नीति में विद्यालयी स्तर पर व्यावहारिक शिक्षा के साथ विद्यार्थियों के चारित्रिक गुणों के विकास को केन्द्र में रखकर शिक्षा प्रदान करने पर विशेष जोर दिया गया है। नई शिक्षा नीति का मूल यही है कि कैसे शिक्षा सर्वांगीण विकास की संवाहक बने। मैंने नई शिक्षा नीति का आद्योपांत पारायण किया है और यह पाया है कि नई शिक्षा नीति भविष्य के रुझानों के साथ-साथ, शिक्षा के जरिए किसी भी प्रकार के व्यवधानों का अनुकूलन करने, विकसित करने और प्रतिक्रिया देने के लिए अग्रणी होने पर ही केन्द्रित है। विद्यालयी स्तर पर क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण के साथ सभी विषयों में कला-संस्कृति से जुड़े आयामों को सम्मिलित करते हुए नई शिक्षा नीति में अध्ययन को रुचिकर बनाने पर भी खास ध्यान दिया गया है।

मैं यह मानता हूँ कि शिक्षा सिर्फ डिग्री प्राप्त करने या फिर किसी विशेष विषय का ज्ञानार्जन के लिए ही नहीं होती। यह वह क्षमता है जिसके जरिए आप बदली हुई परिस्थितियों में अपने आपको ढालने में सक्षम होते हैं।

मुक्त विद्यालय की परिकल्पना भी इसीलिए की गयी है कि किसी कारण से जो लोग औपचारिक शिक्षा से वंचित हैं, या फिर किसी व्यवसाय या नौकरी कार्य से संबद्ध हैं—वे भी शिक्षा की मूलधारा से जुड़ सकें। सुखद है मुक्त विद्यालयी बोर्ड एवं क्षमता संवर्द्धन शिक्षा के जरिए पूर्वांचल प्रदेश सिविकम में शैक्षिक विकास की उज्ज्वल राहों का सृजन किया जा रहा है।

प्रथम स्थापना दिवस के लिए मेरी स्वस्तिकामना है।


(कलराज मिश्र)